4. भक्ति, नीति (बिहारीलाल)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिहारीलाल जी का जन्म कब व कहाँ हुआ था?

उ०– बिहारीलाल जी का जन्म ग्वालियर के बसुआ गोविंदपुर ग्राम में सन् 1603 ई. में हुआ था।

2. बिहारी जी किस काल के प्रमुख कवि थे?

उ०– बिहारी जी रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि थे।

3. बिहारी जी के पिता का क्या नाम था?

उ०– बिहारी जी के पिता का नाम केशवराय चौबे था।

4. बिहारी जी किस राजा के आश्रित कवि थे? बिहारी जी ने किस प्रकार राजा को उनके राजकार्यों के प्रति पुनः सचेत किया?

उ०– बिहारी जी जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के आश्रित कवि थे। बिहारी जी ने एक दोहा लिखकर राजा के पास भेजा, जिसने उन्हें राजकार्यों के प्रति पुनः सचेत किया–

नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अलि कली ही सौं बिंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

5. बिहारी जी की रचना का नाम बताइए तथा इसमें कितने दोहे संकलित हैं?

उ०– बिहारी जी की रचना 'बिहारी सतसई' है तथा इसमें सात सौ उन्नीस दोहे संकलित हैं।

6. बिहारी जी ने अपनी रचनाओं में किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है?

उ०– बिहारी जी ने अपने रचनाओं में साहित्यिक ब्रजभाषा तथा मुक्तक काव्य शैली का प्रयोग किया है।

7. बिहारी जी के काव्य के कौन-कौन से विषय हैं? इन्होंने किन विषयों को अपनी रचना में प्रधानता दी है?

उ०– बिहारी जी के काव्य के विषय श्रृंगार नायिका भेद, भक्ति, नीति, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एवं इतिहास आदि हैं। इन्होंने अपने दोहों में श्रृंगार, नीति एवं भक्ति विषयों को प्रधानता दी है।

8. बिहारी जी द्वारा प्रस्तुत दोहा छंद की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– बिहारी जी ने श्रृंगार संबंधी दोहों में रूप, स्वभाव, मनोविज्ञान, भंगिमा का वर्णन इतना चित्रवत किया है कि पाठक पूर्ण रूप से मंत्रमुग्ध हो जाता है। इन्होंने नीति के दोहों में अनेक कटु अनुभवों तथा भक्ति के दोहों में ईश्वर भक्ति का सरस व सरल वर्णन किया है।

9. बिहारी जी की मृत्यु कब हुई?

उ०– सन् 1663 ई. में बिहारी जी की मृत्यु हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रीकृष्ण की हरे बाँस की बाँसुरी इंद्रधनुष के रंगवाली किस प्रकार हो गई?

उ०– श्रीकृष्ण के अपने लाल होठों पर बाँसुरी को धारण करते ही उस पर होठों की लाल, दृष्टि की श्वेत, वस्त्रों की पीली व शरीर को श्याम रंग की ज्योति पड़ते ही हरे बाँस की बाँसुरी इंद्रधनुष के रंगवाली हो गई।

2. श्याम वर्ण में डूबने पर हृदय किस प्रकार उज्ज्वल हो जाता है? विस्तारपूर्वक समझाइए।

उ०– श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाले मन की दशा अत्यंत विचित्र होती है। इसकी दशा को कोई नहीं समझ सकता है। प्रत्येक वस्तु काले रंग में डूबने पर काली हो जाती है, श्रीकृष्ण भी श्यामवर्ण के ही हैं, किंतु कृष्ण के प्रेम में मग्न हृदय जैसे-जैसे श्याम रंग (कृष्ण के प्रेम, भक्ति, ध्यान आदि) में मग्न होता है वैसे-वैसे हृदय उज्ज्वल (पवित्र) होता जाता है।

3. 'खुटैं न कपट-कपाट' से बिहारी जी का क्या आशय है?

उ०– 'खुटैं न कपट-कपाट' से बिहारी जी का आशय है कि जब तक मनरूपी घर में दृढ़ता से बंद किए हुए कपटरूपी किवाड़ पूरी तरह से नहीं खुल जाते तब तक ईश्वर मन में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। हृदय से कपट निकाल देने पर ही ईश्वर का हृदय में प्रवेश व निवास संभव है।

4. प्रजा के लिए दो राजाओं का राज्य किस प्रकार दु:खदायी होता है?

उ०– एक ही देश में दो राजाओं का राज्य होने से प्रजा के दु:ख व संघर्ष बढ़ जाते हैं। इसलिए प्रजा के लिए दो राजाओं का राज्य दु:खदायी होता है।

5. भगवान मनरूपी मंदिर में किस प्रकार प्रवेश कर सकते हैं?

उ०– भगवान मनरूपी मंदिर में तब प्रवेश कर सकते हैं, जब मनरूपी मंदिर के कपटरूपी किवाड़ सदा-सदा के लिए पूरी तरह से खुल जाते हैं। अर्थात् हृदय से कपट निकल जाने पर ही ईश्वर मन में प्रवेश करते हैं।

6. मनुष्य भगवान को कब तक व क्यों नहीं जान सकता है?

उ०– जब तक मनुष्य का मन ईश्वर की भक्ति में कच्चा है तथा मनुष्य का मन निर्मल नहीं है, तब तक वह ईश्वर को नहीं जान सकता है।

7. बुरे व्यक्ति के बुराई त्याग देने पर अन्य व्यक्ति शंकित क्यों हो जाते हैं?

उ०– बुरे व्यक्ति के बुराई त्याग देने पर अन्य व्यक्ति इसलिए शंकित हो जाते हैं क्योंकि अचानक बुरे व्यक्ति के अपनी बुराई छोड़कर अच्छा व्यवहार करने से दूसरे व्यक्ति को चित्त अधिक भयभीत हो जाता है और उसे किसी अनिष्ट की आशंका उत्पन्न हो जाती है।

8. बिहारी जी के अनुसार मनुष्य एवं पानी के नल की दशा समान क्यों है?

उ०– बिहारी जी के अनुसार मनुष्य एवं पानी के नल की दशा इसलिए समान होती है क्योंकि जल व मनुष्य जितना नीचे होकर चलते हैं, उतना ही ऊँचे उठते हैं अर्थात् वे जितना नम्रता का व्यवहार करते हैं, उतनी ही उन्नति करते हैं।

9. जिनके मन में बुराई वास करती है, सभी मनुष्य उसी को सम्मान देते हैं। क्यों?

उ०– जिनके मन में बुराई वास करती है, सभी मनुष्य उसी का सम्मान इसलिए करते हैं क्योंकि भले व्यक्ति को हानि न पहुँचाने वाला समझकर अर्थात् भला कहकर सब छोड़ देते हैं अर्थात् उसकी उपेक्षा करते हैं, इसके विपरीत बुरे व्यक्तियों से बचने व उसे शांत करने के लिए सब उनका सम्मान करते हैं।

10. बिहारी जी की भक्ति भावना को संक्षिप्त रूप में समझाइए।

उ०– बिहारी जी रीतिकाल के प्रमुख रीतिमुक्त कवि थे। जो कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवियों में से थे। बिहारी कृष्ण को प्रसन्न करने के लिए राधा जी से प्रार्थना करते हैं। वे श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य की भक्तिवश स्तुति करते हुए श्रीकृष्ण के मोर मुकुट की चंद्रिकाओं की तुलना भगवान शिव के सिर पर विराजमान चंद्रमा से करते हैं। बिहारी जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण के श्याम शरीर पर पीले वस्त्र इस प्रकार शोभा पा रहे हैं, मानो नीलमणि पर्वत पर प्रात: काल की पीली पीली धूप पड़ रही हो। बिहारी जी श्रीकृष्ण की बाँसुरी को सात रंगों वाले इंद्रधनुष के रंगों के समान वाली बताते हैं। बिहारी जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण की भक्ति के श्याम रंग में मन जितना मग्न हो जाएगा, यह उतना ही निर्मल हो जाएगा। श्रीकृष्ण मन में तभी प्रवेश करेंगे, जब मन से कपट दूर हो जाएगा। कवि कहते हैं कि जिस ईश्वर ने तुम्हें संसार का ज्ञान कराया है तुम उसे तब तक नहीं जान सकते जब तक सच्चे मन से अर्थात् पक्के मन से उसकी शरण में नहीं जाते। इस प्रकार बिहारी जी ने भक्ति भाव के साथ श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य तथा उनके स्वरूप का वर्णन किया है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. बिहारीलाल जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– बिहारीलाल जी को रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि एवं 'गागर में सागर' भरने वाले अर्थात् कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट करने वाले कवि के रूप में जाना जाता है। बिहारीलाल ऐसे कवि थे, जो केवल एकमात्र रचना के द्वारा ही हिंदी साहित्य के विद्वान बन गए। पं. पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी के काव्य की प्रशंसा में लिखा भी है—''बिहारी के दोहों का अर्थ गंगा की विशाल जलधारा के समान है, जो शिव की जटाओं में समा तो गई थी, परंतु उससे बाहर निकलते ही वह इतनी असीम और विस्तृत हो गई कि लंबी-चौड़ी धरती में भी सीमित न रह सकी। बिहारी के दोहे रस के सागर हैं, कल्पना के इंद्रधनुष हैं, भाषा के मेघ हैं। उनमें सौंदर्य के मादक चित्र अंकित है।''

जीवन परिचय– रससिद्ध कवि बिहारीलाल का जन्म ग्वालियर के बसुआ गोविंदपुर ग्राम में सन् 1603 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय चौबे था, जो मथुरा के चौबे ब्राह्मण थे। ये बचपन में ही अपने पिता के साथ ग्वालियर से ओरछा नगर आकर रहने लगे। यहीं पर इन्होंने आचार्य केशवदास से काव्यशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। काव्यशास्त्र में अधिक रुचि होने के कारण ये कुछ ही समय में काव्य शास्त्र में पारंगत हो गए। फिर विवाह के पश्चात् इनका अधिकांश समय अपनी ससुराल मथुरा में व्यतीत हुआ।

बिहारी, जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। कहा जाता है कि एक बार राजा जय सिंह अपनी नई रानी के प्रेम में इतना मग्न हो गए कि राजकार्यों से उनका मन विरक्त हो गया। तब कवि बिहारी ने एक दोहा लिखकर उनके पास भेजा—

नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अलि कली ही सौं बिंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

इस दोहे को पढ़कर राजा जयसिंह अत्यधिक प्रभावित हुए तथा उन्होंने पुन: राजकार्यों में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया। राजा जयसिंह कवि बिहारी का अत्यधिक सम्मान करते थे तथा उन्हें प्रत्येक दोहे के परिणामस्वरूप एक स्वर्ण मुद्रा उपहार स्वरूप दिया करते थे। राजा जयसिंह की प्रेरणा से ही बिहारी जी ने 'बिहारी सतसई' की रचना की। इनकी रचना में सात सौ उन्नीस दोहे है तथा यह सन् 1662 ई. में समाप्त हुई।

कविवर बिहारी ने अपने छोटे-से जीवन में अनेक कष्टों का अनुभव किया। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद ये संसार से विरक्त हो गए तथा आगरा आकर रहने लगे जहाँ इनकी भेंट कवि रहीमदास से हुई, जिसके बाद ये पूर्णरूप से भगवान कृष्ण की भक्ति में मग्न हो गए। सन् 1663 ई. में बिहारीलाल का देहावसान हो गया।

साहित्यिक परिचय– मात्र एक ग्रंथ की रचना से ही बिहारी जी हिंदी साहित्य के देदीप्यमान सूर्य बन गए। इनकी रचना 'बिहारी सतसई' वर्तमान में भी पाठकों के हृदय में विराजमान है। इनकी रचना इतनी लोकप्रिय है कि उसकी अनेक टीकाएँ भी लिखी गई हैं। कई कवियों ने इनके दोहों पर आधारित अन्य छंदों की रचना भी की है।

बिहारी जी ने अपनी उत्कृष्ट रचना से हिंदी साहित्य को जो गरिमा प्रदान की है, वह अतुलनीय है। पं. पद्मसिंह शर्मा ने इनके संबंध में लिखा है, ''यदि सूर सूर्य और तुलसी शशि हैं तो बिहारी पियुषवर्ती मेघ हैं, जिनके आते ही सबकी ज्योति मंद पड़ जाती है।''

2. बिहारी जी की भाषागत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– भाषागत विशेषताएँ– बिहारी जी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। यह एक मुक्तक काव्य-रचना है, जिसमें मुक्तक काव्य की सभी विशेषताएँ समाहित हैं। बिहारी जी ने अपनी रचना में छोटे छंदों का प्रयोग कर विस्तृत अर्थ की सफल अभिव्यंजना की है। इनके द्वारा रचित कुछ दोहों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए काव्य-साहित्य के समस्त ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिहारी जी के दोहे विभिन्न विषयों, जैसे- श्रृंगार नायिका-भेद, भक्ति, नीति, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एवं इतिहास आदि पर आधारित हैं किंतु इन्होंने अपने दोहों में श्रृंगार, नीति एवं भक्ति को प्रधानता दी है। श्रृंगार संबंधी दोहों में रूप, स्वभाव, मनोविज्ञान, भंगिमा का वर्णन इतना चित्रवत् है कि पाठक इसमें पूर्णरूप से मंत्रमुग्ध हो जाता है। इन्होंने नीति के दोहों में अनेक कटु अनुभवों का वर्णन किया है तथा भक्ति के दोहों में ईश्वर भक्ति का सरल व सरस वर्णन किया है।

इनके सभी दोहों के गहन भाव से युक्त होने के संबंध में कहा भी गया है—

सतसैया के दोहरे, ज्यौं नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर॥

बिहारी जी ने अपनी रचना में साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। किंतु इन्होंने विषय के अनुसार उर्दू, फारसी, पूर्वी हिंदी आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनकी रचना में शब्द-योजना तथा वाक्य-रचना बड़ी व्यवस्थित है। इन्होंने अपनी रचना में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी यथासंभव प्रयोग किया है। इनके काव्य में रूपक, उपमा, श्लेष, अतिशयोक्ति, अनुप्रास तथा अन्योक्ति आदि अलंकारों का मुख्यत: प्रयोग हुआ है। भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों ही दृष्टि से इनका काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। बिहारी जी ने अपनी रचना में मुक्तक काव्य-शैली का प्रयोग किया है। कई स्थानों पर मुक्तक काव्य-शैली के साथ-साथ समास शैली का भी प्रयोग किया गया है। इस शैली के प्रयोग से ही इन्होंने अपने काव्य में 'गागर में सागर' भर दिया था।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) मेरी भव-बाधा ..... हरित-दुति होइ॥

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'बिहारीलाल' द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से 'भक्ति' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– कवि ने अपने ग्रंथ के प्रारंभ में राधा जी की वंदना की है।

व्याख्या– 1. वह चतुर राधिका जी मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें, जिनके पीली आभा वाले (गोरे) शरीर की झाँई (प्रतिबिम्ब) पड़ने से श्याम वर्ण के श्रीकृष्ण हरित वर्ण की द्युति वाले; अर्थात् हरे रंग के हो जाते हैं।

2. वे चतुर राधिका जी मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें, जिनके शरीर की झलक पड़ने से भगवान कृष्ण भी प्रसन्नमुख (हरित-कांति) हो जाते हैं।

3. हे चतुर राधिका जी! आप मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें, जिनके ज्ञानमय (गौर) शरीर की झलकमात्र से मन की श्यामलता (पाप) नष्ट हो जाते हैं।

4. वह चतुर राधिका जी मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें, जिनके गौरवर्ण शरीर की चमक पड़ने से श्रीकृष्ण भी फीकी कान्ति वाले हो जाते हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत दोहे की रचना मंगलाचरण के रूप में हुई है। 'बिहारी सतसई' श्रृंगार रसप्रधान रचना है, अत: इसमें श्रृंगार की देवी राधिकाजी की वंदना की गई है। **2.** नील और पीत वर्ण मिलकर हरा रंग हो जाता है। यहाँ बिहारी का चित्रकला-ज्ञान प्रकट हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** श्रृंगार एवं भक्ति **6. गुण–** माधुर्य एवं प्रसाद **7. अलंकार–** अनुप्रास, श्लेष **8. छंद–** दोहा।

(ब) सोहत ओढ़ैं पीतु ..... आतपु पर्‌यौ प्रभात॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में पीला वस्त्र ओढ़े हुए श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– श्रीकृष्ण का श्याम शरीर अत्यंत सुंदर है। वे अपने शरीर पर पीले वस्त्र पहने इस प्रकार शोभा पा रहे हैं, मानो

नीलमणि के पर्वत पर प्रात:काल की पीली-पीली धूप पड़ रही हो। यहाँ श्रीकृष्ण के श्याम वर्ण के उज्ज्वल मुख में नीलमणि शैल की और उनके पीले वस्त्रों में प्रात:कालीन धूप की संभावना की गई है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ श्रीकृष्ण के श्याम शरीर में नीलमणियों के पर्वत को तथा उनके पीले वस्त्रों में प्रात:काल की धूप को आरोपित किया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शृंगार एवं भक्ति **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास एवं उत्प्रेक्षा **7. छंद–** दोहा।

(स) या अनुरागी चित्त ..... उज्जलु होइ॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में कवि ने बताया है कि श्रीकृष्ण के प्रेम से मन की म्लानता एवं कलुषता दूर हो जाती है।

व्याख्या– कवि का कहना है कि श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाले मेरे मन की दशा अत्यन्त विचित्र है। इसकी दशा को कोई नहीं समझ सकता है; क्योंकि प्रत्येक वस्तु काले रंग में डूबने पर काली हो जाती है। श्रीकृष्ण भी श्याम वर्ण के हैं, किन्तु कृष्ण के प्रेम में मग्न यह मेरा मन जैसे-जैसे श्याम रंग (कृष्ण की भक्ति,ध्यान आदि) में मग्न होता है, वैसे-वैसे श्वेत (पवित्र) होता जाता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कृष्ण के भक्ति के महत्व को बताने के लिए कवि ने अद्‌भुत काव्य समायोजन किया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत, **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** पुरुक्तिप्रकाश, श्लेष एवं विरोधाभास **7. छंद–** दोहा।

(द) तौ लगु या ..... न कपट-कपाट॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कवि ने ईश्वर को हृदय में बसाने के लिए कपट का त्याग करना आवश्यक बताया है।

व्याख्या– कविवर बिहारी का कहना है कि इस मनरूपी घर में तब तक ईश्वर किस मार्ग से प्रवेश कर सकता है, जब तक मनरूपी घर में दृढ़ता से बंद किए हुए कपटरूपी किवाड़ पूरी तरह से नहीं खुल जाते; अर्थात् हृदय से कपट निकाल देने पर ही हृदय में ईश्वर का प्रवेश व निवास संभव है।

काव्यगत सौंदय– 1. ईश्वर की प्राप्ति निर्मल व पवित्र मन से ही संभव है। इस भावना की कवि ने यहाँ उचित अभिव्यक्ति की है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** भक्ति **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास **7. छंद–** दोहा।

(य) दुसह दुराज ..... मावस रबि-चंदु॥

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'बिहारीलाल' द्वारा रचित'बिहारी सतसई' से 'नीति' शीर्षक से उद्‌धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में दो राजाओं के शासन से उत्पन्न कष्टों का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कवि का कथन है कि एक ही देश में दो राजाओं के शासन से प्रजा के दु:ख और संघर्ष अत्यधिक बढ़ जाते हैं। दुहरे शासन में प्रजा उसी प्रकार दु:खी हो जाती है, जिस प्रकार अमावस्या की रात्रि में सूर्य और चंद्रमा एक ही राशि में मिलकर संसार को गहन अंधकार से पूर्ण कर देते हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यह बिहारी का नीति संबंधी दोहा है। उनका राजनैतिक ज्ञान भी इससे प्रकट होता है। **2.** अमावस्या की रात में सूर्य और चंद्रमा (दो राजा) एक ही राशि में आ जाते हैं। ऐसा सूर्यग्रहण के समय में होता है। यह कवि के ज्योतिष ज्ञान का भी परिचायक है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** दृष्टांत, श्लेष एवं अनुप्रास **8. छंद–** दोहा।

(र) बढ़त-बढ़त ..... बरु समूल कुम्हिलाइ॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में कवि ने धन के बढ़ने पर मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि का कथन है कि धनरूपी जल के बढ़ जाने के साथ-साथ मनरूपी कमल भी बढ़ता चला जाता है, किंतु धनरूपी जल के घटने के साथ -साथ मनरूपी कमल नहीं घटना, अपितु समूल नष्ट हो जाता है अर्थात् धन के बढ़ जाने पर मन की इच्छाएँ भी बढ़ जाती हैं, परंतु धन के घट जाने पर मन की इच्छाएँ नहीं घटती हैं। तब परिणाम यह होता है कि मनुष्य यह सह नहीं पाता और दु:ख से मरे हुए के समान हो जाता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कमल से मनुष्य के मन की उपमा देकर कवि ने यह स्पष्ट किया है कि धन के बढ़ने पर मन को नियंत्रित रखना चाहिए अन्यथा धन न रहने पर बहुत कष्ट होता है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** पुनरुक्ति प्रकाश, रूपक एवं अनुप्रास **7. छंद–** दोहा।

(ल) जौ चाहत चटक ..... नेह-चीकने चित्त॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कवि ने मित्रता के मध्य धन और वैभव को न आने देने का परामर्श दिया है।

व्याख्या– कवि का कथन है कि यदि आप चाहते हैं कि मित्रता की चटक अर्थात् चमक समाप्त न हो तथा मित्रता स्थायी बनी रहे और उसमें दोष उत्पन्न न हों, तो धन-वैभव का इससे संबंध न होने दें। धन अथवा किसी अन्य वस्तु का लोभ मित्रता को मलिन कर देता है। मित्र के स्नेह से चिकना मन धनरूपी धूल के स्पर्श से मैला हो जाता है; अत: स्नेह में धन का स्पर्श न होने दें। जिस प्रकार तेल से चिकनी वस्तु धूल के स्पर्श से मैली हो जाती है और उसकी चमक घट जाती है, उसी प्रकार प्रेम से कोमल चित्त; धनरूपी धूल के स्पर्श से दोषयुक्त हो जाता है और मित्रता में कमी आ जाती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने चित्त की निर्मलता बनाए रखने के लिए रजोगुण से बचने हेतु प्रेमरूपी तेल व धूल के संयोग की जो प्रवृतिमूलक उपमा दी है, उसने कवि के कथन को कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक रूप दिया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक एवं श्लेष **7. छंद–** दोहा।

(व) स्वारथु सुकृतु, न ..... पच्छीनु न मारि॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कवि ने अन्योक्ति के माध्यम से अपने आश्रयदाता राजा जयसिंह को समय पर चेतावनी दी है। इस दोहे में उसे हिंदू राजाओं पर आक्रमण न करने के लिए अन्योक्ति द्वारा सचेत किया गया है।

व्याख्या– (1) हे बाज! तू अपने मन में अच्छी तरह सोच-विचार कर देख ले कि तू शिकारी के हाथ में पड़कर अपनी जाति के पक्षियों को मारता है। इसमें न तो तेरा स्वार्थ है न यह अच्छा कार्य ही है, तेरा श्रम भी व्यर्थ ही जाता है; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल तुझे न मिलकर तेरे मालिक को प्राप्त होता है। तू दूसरों के हाथ की कठपुतली बनकर अपनी जाति के पक्षियों का वध कर रहा है। अब तू मेरी सलाह मानकर अपनी जाति के पक्षियों का वध मत कर।

(2) हे राजा जयसिंह! तू विचार कर देख ले कि तू बाज पक्षी की तरह अपने शासक औरंगजेब के हाथ की कठपुतली बनकर अपने साथी इन हिंदू राजाओं पर आक्रमण कर रहा है। इस कार्य को करने से तेरे स्वार्थ की पूर्ति नहीं होती है, जीता हुआ राज्य तुझे नहीं मिलता। युद्ध में राजाओं का वध करना कोई पुण्य का कार्य भी नहीं है। तुम्हारे श्रम का फल तुम्हें न मिलने से तुम्हारा श्रम व्यर्थ हो जाता है। इसलिए तू औरंगजेब के कहने से अपने पक्ष के हिंदू राजाओं पर आक्रमण करके उनका वध मत कर।

काव्यगत सौंदर्य– 1. औरंगजेब के कहने पर हिंदू नरेशों का विरोध करने वाले राजा जयसिंह के लिए कवि ने इस अन्योक्ति का प्रयोग किया था। उन दोनों में यह तय हुआ था कि विजित राज्य औरंगजेब को तथा विजित राज्य की लूट में मिला धन जयसिंह को मिलेगा। अत: राजा जयसिंह को चेतावनी देना उसके आश्रित कवि बिहारी का कर्तव्य है। **2.** यहाँ बाज पक्षी-जय सिंह का, शिकारी-औरंगजेब का तथा पक्षी अपने पक्ष के हिंदू राजाओं का प्रतीक है। यह दोहा इतिहास की प्रसिद्ध घटना पर आधारित होने के कारण विशेष महत्व रखता है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** अन्योक्ति एवं श्लेष **8. छंद–** दोहा।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रँग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होई।

भाव स्पष्टीकरण– कवि बिहारीलाल जी यहाँ कहते हैं कि जैसे-जैसे ही मनुष्य का मन श्याम रंग अर्थात् कृष्ण के प्रेम, भक्ति व ध्यान आदि में मग्न या लीन होता जाता है, वैसे-वैसे ही उस मनुष्य का मन पवित्र व निर्मल होता जाता है।

(ब) जप, माला, छापा, तिलक, सरै न एकौ कामु।

भाव स्पष्टीकरण– कवि बिहारीलाल जी यहाँ अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि भक्ति के मार्ग में बाह्य आडंबरों जैसे लोक दिखावे के लिए जप करना, लोगों को दिखाने के लिए गले में माला पहनने, माला फेरने, चंदन का तिलक लगाने आदि क्रियाओं से कोई भी काम पूरा नहीं होता है क्योंकि ईश्वर तो केवल सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।

(स) बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।

भाव स्पष्टीकरण– बिहारी लाल जी ने अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि अचानक दुष्ट व्यक्ति के बुराई का त्याग कर देने से उसके प्रति लोगों के मन में शंका अर्थात् चित में अधिक डर बना रहता है क्योंकि जैसे चंद्रमा का दागरहित होना अमंगलकारी होता है वैसे ही दुष्ट व्यक्ति का तुरंत बुराई को त्यागना असंभव है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिहारी जी ने काव्यशास्त्र की शिक्षा किससे प्राप्त की?

(अ) केशवराय चौबे से (ब) **केशवदास से**

(स) रहीम से (द) सूरदास से

2. राजा जयसिंह को उनके राजकार्यों की ओर प्रेरित करने के लिए बिहारी जी ने क्या लिखा?

(अ) **दोहा** (ब) छंद

(स) बिहारी सतसई (द) इनमें से कोई नहीं

3. निम्नलिखित में से बिहारी जी की रचना कौन-सी है?

(अ) **बिहारी सतसई** (ब) गीतावली

(स) साहित्य-लहरी (द) विनय पत्रिका

4. 'बिहारी सतसई' किस काल से संबंधित है?

(अ) **रीतिकाल** (ब) भक्तिकाल

(स) आधुनिक काल (द) इनमें से कोई नहीं

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित दोहों में अलंकार, रस एवं स्थायीभाव की विवेचना कीजिए–

(अ) मोर-मुकुट की चंद्रिकनु, यौं राजत नँदनंद।
मनु ससि शेखर की अकस, किय सेखर सत चंद॥

उ०– अलंकार – उत्प्रेक्षा, अनुप्रास एवं श्लेष
रस – शृंगार
स्थायी भाव – रति

(ब) अधर धरत हरि कैं परत, ओठ-डीठि-पट-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इंद्रधनुष-रँग होति॥

उ०– अलंकार – यमक, अनुप्रास एवं उपमा
रस – भक्ति
स्थायी भाव – देव-विषयक रति

(स) जप, माला, छापा, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचे राँचे रामु॥

उ०– अलंकार – अनुप्रास
रस – शांत
स्थायी भाव – निर्वेद

(द) नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जैसो नीचो ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ॥

उ०– अलंकार – उपमा, विरोधाभास, दीपक एवं श्लेष
रस – शांत
स्थायी भाव – निर्वेद

(य) बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।
ज्यों निकलंकु मंयकु लखि, गनैं लोग उतपातु।।

उ०– अलंकार – अनुप्रास एवं दृष्टांत
रस – शांत
स्थायी भाव – निर्वेद

2. श्लेष अलंकार की परिभाषा एवं दो उदाहरण दीजिए।

उ०– श्लेष अलंकार की परिभाषा– जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त होकर अनेक अर्थ प्रकट करे, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण– 1. मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परै, स्यामु हरित–दुति होइ।।
2. नर की अरु नल–नीर की, गति एकै करि जोइ।
जैतौ नीचो ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता